

Repeat.

Nashik

Dec 13-14

03

Lata Pawar.

Proceeding

ISBN No: 978-93-80744-48-3

Gokhale Education Society's
RNC Arts, JDB Commerce & NSC Science College - Nashik Road.

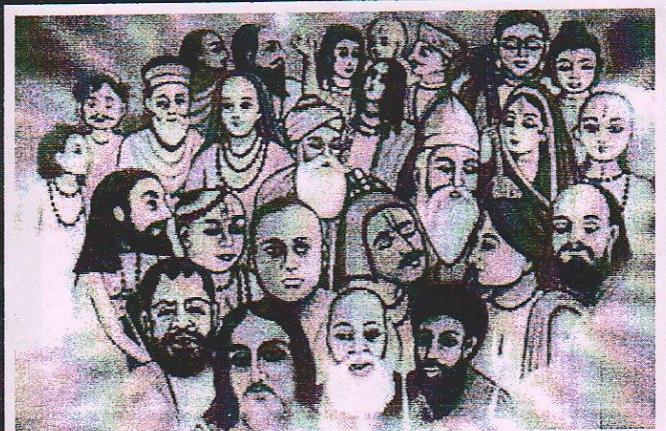
Affiliated to University of Pune
ISO 9001:2008 Certified
NAAC reaccredited 'B' Grade

Ph.Off. (022) 2469114
Fax No. (022) 2469112
Website : www.cbsnashikroadcollege.com
E-mail : cbsnashikroadcollege@gmail.com

CONFERENCE PROCEEDINGS

E-JOURNAL

Golden Jubilee Celebrations
Two day National Conference on
Contribution of Sant Sahitya (Saint Literature)
to Indian Culture
28th & 29th December, 2013



Conference Director & Editor-in-Chief

Prin. Dr. R M Kulkarni

Convener: Dr. Anjali A Gautam

Coordinator: Dr. Chitra Mhalas

A Two Day National Conference

Session: III

- ❖ Economic Thoughts
- ❖ Traditional of Saint Literature in India
- ❖ The History of Indian and Saint Literature

INDEX

| Paper No. | Title of the Paper | Name |
|-----------|--|----------------------------------|
| 1. | बुद्धतच्चज्ञानाणि संतसाहित्य | डॉ. शशिकांतसाळवे |
| 2. | मुक्तेश्वराची आरती- (भाषिकदृश्य) विचार | डॉ. श्रीमती. जयश्री पाटणकर |
| 3. | Spiritual Economics of Swami Vivekananda; As a Solution to the Economic Crisis | Dr.Shri. Dilip G. Belgaonkar |
| 4. | संत तुकारामांच्या कवितेतील कालातील प्रस्तुतता | डॉ. लता देशमुख, |
| 5. | Reflection on Sant Kabirdas : A Lover of Indian Culture | Dr.Smt. Garima Yadav |
| 6. | शिवकलीन संतांचे मराठी वाडःमयातील योगदान | श्री. ए.ए.ल.भुसारे |
| 7. | वारकरी संप्रदायाचा इतिहास आणि संत साहित्य | श्रीमती. लता पवार |
| 8. | संत साहित्यातील घटिला संत व त्यांचा साहित्य अधिक्षार | श्री. दिवाकर सदाशिव |
| 9. | समर्थ रामदासांच्या धर्म कन्या-कार्य व कर्तृत्व | डॉ. श्रीमती. नीलिमा माधव पांडे |
| 10. | संत वाडमयाची मडता | श्रीमती. धवसे कीर्तिमाला लक्ष्मण |

वारकरी संप्रदायाचा इतिहास आणि संत साहित्य

प्रा. लता पवार

कै. बी. आर. डी. महिला महाविद्यालय,
नाशिकोड

साहित्य हे लोकाच्या जीवनाच्या अनुभवांशी निगडीत असते. साहित्याचे संदर्भ त्या त्या काळातील समाजजीवन, बोलीभाषा, संस्कृती, वाडमयपरंपरा या सर्व घटकांमध्ये गुंतलेले असतात. म्हणून साहित्याचा विधार या साहित्यनिर्मितीच्या काळातील समाजजीवनाच्या पाखंभूमीवर करावा लागतो.

इ.स. प्रारंभापासून सातवाहन, बाकाटक, पूर्वचालुक्य, राष्ट्रकृत, उत्तरचालुक्य आणि यादव अशी राजधारांनी १४ व्या शतकापर्यंत राज्य करत होती. यादवांमुळे मराठी राज्याचा उत्कर्ष आणि विस्तार झाला. तरे परकीय आक्रमणांही ह्याच राजवटीने सोसली. नवव्या शतकाअखेर देवगिरी येथून हे धराणे स्वतंत्र कर्तृत्वाने गाजू लागते. १२ व्या शतकाच्या संतंवर आलेले हे राजे १३ व्या शतकात किंतीमान झाले आणि १४ व्या शतकाच्या पूर्वार्धातच ही सत्ता नाश पावली. म्हणून १२ ते १३ वे शतक हा यादवांच्या राजवटीचा काळ म्हणून ओढखला जातो.

८ व्या व ९ व्या शतकापासून मराठी या देशी भाषेचा प्रारंभ झालेला दिसून येतो. ११ व्या शतकातील मुळदराजाचा विवेकसिधू मराठीतील आद्यग्रंथ मानला जातो. दरम्यान १२ व्या १३ व्या शतकापर्यंत मराठीत फारशी लक्षणीय वाडमय निर्मिती झालेली दिसत नाही.

संत साहित्याची जे काही लेखन झाले त्या सर्व लेखनामागे शुद्ध वाडमयीन प्रेरणा होत्या. कोही महत्त्वाकांक्षा आणि व्यक्तिगत यशाच्या अपेक्षा होत्या. संतसाहित्याच्या निर्मितीमागे अशा कोणत्याही प्रेरणा दिसून येत नाहीत. मराठी भाषेत उत्तमप्रतीची वाडमयनिर्मिती संतसाहित्यापासूनच होत आलेली दिसते. ज्या भागतीत संप्रदायाचा एक भाग म्हणून संत-साहित्य निर्माण झाले तो संप्रदाय मुळी समाजाच्या परमार्थिक उत्तरीसाठी निर्माण झालेला होता. म्हणून संत साहित्याच्या प्रेरणा व्यापक अशा समाजजीवनात सापडतात.

यादवकाळात वर्ण श्रमाची घडू पकड असलेला समाज जातिभेद काटेकोरपणे पाळत होता. उच्चवर्णीय शुद्धांना अन्यायाने गुलामगिरीने बागवत. कोलमडायला आलेली न्यायव्यवस्था, आर्थिक अवनती, सामाजिक चारित्र्याचा न्हास आणि अस्थिरता यामुळे समाज एकप्रकारे हलाळीचे जीवन जगत होता. दित्यासा रेणारे कोणतेही नेतृत्व सामाजिक राजकीय स्तरात दिसत नक्ते. अशा परिस्थितीतून समाजाला बाहेर काढण्याची तळधम लेलाना तागली त्याकाळी धर्म हे समाजजीवनाचे केंद्र येते. म्हणून समाजाला धर्माचे ख्रेर स्वरूप दाखलेण्यासाठी आणि भानवतेला अनुसरणारी भक्तीच चारित्र्यशुद्धीचे साधन वनवावे असे संताना बाटले. त्याकाळी समाजामध्ये अनेक धर्मपंथ प्रचालित होते. उदा. जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव, दत्त, महाराष्ट्राव इ. प्रत्येक संप्रदायाची स्वतंत्र देवते आणि उपासना पद्धती रुढ होत्या. कर्मकांडाचे स्तोम माजलेले होतेच. धर्माचे ख्रेर स्वरूप स्पर्श करण्यासाठी संतानी आपले गवतेगपांग विचार भाडवत. धर्म लढी प्रथामध्ये नाही की, कमळ आचारगमध्ये नाही. परमधर गवळ अरेन की येवं

~~Not for Circulation~~ Dec 13-
05

Please

ISBN No: 978-93-80744-48-3

Gokhale Education Society's
RNC Arts, JDB Commerce & NSC Science College - Nashik Road.

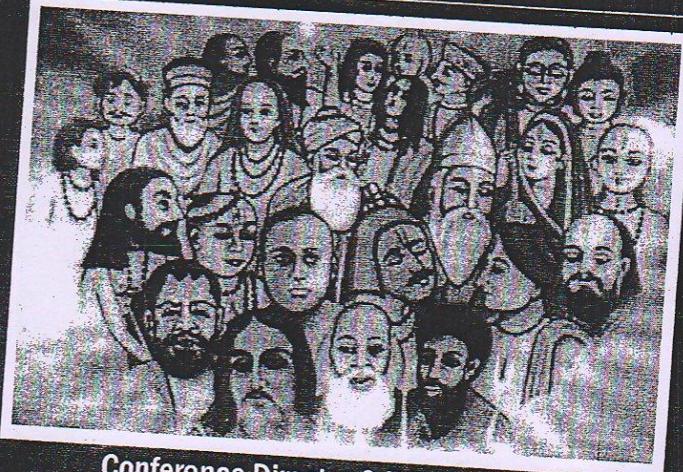
Affiliated to University of Pune
ISO 9001:2008 Certified
NAAC reaccredited 'B' Grade

Ph.Off: 0222-2491575
Fax No.: 0222-2491112
Website : www.ccnashikroadcollege.com
Email : cccnashikroadcollege@gmail.com

CONFERENCE PROCEEDINGS

E-JOURNAL

Golden Jubilee Celebrations
Two day National Conference on
**Contribution of Sant Sahitya (Saint Literature)
to Indian Culture**
28th & 29th December, 2013



Conference Director & Editor-in-Chief

Prin. Dr. R M Kulkarni

Convener: Dr. Anjali A Gautam

Coordinator: Dr. Chitra Mhalas

संत कबीर के काव्य में नैतिक मूल्य

प्रा. सौ. मीनल बर्वे

बिंदु रामराव देशमुख कला और वाणिज्य महिला महाविद्यालय
नासिकरोड

साहित्य सृजन परिस्थिति-सापेक्ष होता है। यही कारण है कि भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार का साहित्य लिखा जाता रहा है। यदि ऐसा न होता तो निश्चय ही भारतीय साहित्य में इतनी अधिक विविधता न होती। कहने का अभिप्राय यह है कि परिस्थितियाँ जैसे जैसे बदलती हैं, वैसे-वैसे साहित्य में उठाये गये विषयों और स्थापित मूल्यों में भी बदलाव आता है। भक्तिकाल में जब परेस्थितियों ने वीरकाव्यों की माँग की तो वीरकाव्य लिखे गये, भक्तिसाहित्य चाहा तो भक्ति-साहित्य की रचना की गयी।

भक्तिपरक साहित्य की प्रधानता होने के कारण भक्तिकालीन साहित्य भक्तिकाव्य कहलाया। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल (१३७५-१७०० ई.) में भक्ति की दो धाराएँ-सगुण और निर्गुण प्रवाहित हुई। सगुणधारा के अंतर्गत राम-कृष्ण भक्ति शाखाएँ आती हैं, निर्गुण के अंतर्गत संत तथा सूफियों का काव्य। निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों को संत और उनके साहित्य को संत साहित्य कहा गया है। जबकि सूर, तुलसी आदि के साहित्य को भक्ति काव्य कहा जाता है।

संत का अर्थ है “बुद्धिमान”, “पवित्रात्मा” और “परोपकारी व्यक्ति”। कबीरदास ने संत का परिचय देते हुए लिखा है:

निरवर्ती निहकामता, साई सेती नेह।

विषयाँ सूँ न्यारा रहै, सन्तन के अंग एह। २

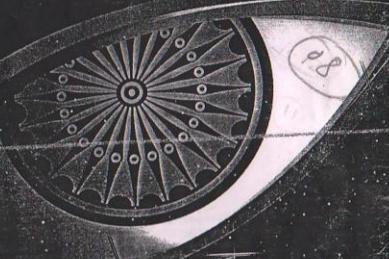
अर्थात जिसका कोई वैरी न हो, जो स्वामी(परब्रह्म) से नेह करता है, जो विषयों से मुक्त हो, संत के ये लक्षण होते हैं। अर्थात निर्गुणोपासकों को संत कहा जाता है जबकि सगुणोपासकों को भक्त। हिंदी साहित्य के संत काव्य में मराठी के संत नामदेव, हिंदी के रामानन्द, कबीर, रैदास, नानक, दादू और सुन्दरदास आदि के काव्य का ग्रहण होता है।

संत काव्य का अध्ययन करने के बाद यह दृष्टिगोचर होता है कि संत काव्य में प्रमुखतः आध्यात्मिक विषयों को अभिव्यक्त किया गया है किन्तु ये आध्यात्मिक विषय कवि की सामाजिक

ISSN 2320 - 4494
RNI No. MAHAU103008/13/1/2012-TC

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal
VOLUME : ISSUE VI Jan.- Mar. 2014.



ARTS | COMMERCE | SCIENCE | AGRICULTURE | EDUCATION | MANAGEMENT | MEDICAL
ENGINEERING & IT | LAW | SOCIAL SCIENCES | PHYSICAL EDUCATION | JOURNALISM | PHARMACY

Editor

Sarkate Sadashiv Haribhau

Email : cover@powerofknowledge3@gmail.com, sarsarkate@gmail.com

THIS QUARTERLY "POWER OF KNOWLEDGE" IS PRINTED BY,
PUBLISHED BY & OWNED BY SAW SARKATE LATA SADASHIV &
PRINTED AT SHRADHA ENTERPRISES, OPP. TAHSIL OFFICE,
NAGAR ROAD,BEED, TO. & DIST BEED - 431 122 (M.S.) &
PUBLISHED AT GEORAI, DIST. BEED 431 143 (M. S.)
EDITOR : SARKATE SADASHIV HARIBHAU

RNI No. MAHAU103008/13/1/2012-TC

| | | | |
|----|---|----------------------------------|-----|
| १८ | तौलनिकसाहित्याभ्यासाचे स्वरूप व वैशिष्ट्ये | प्रा.देठे मिरा महादेवराव | ८२ |
| १९ | साहित्य कृतीच्या माध्यमांतराचे स्वरूप | प्रा.डॉ.शकील अब्दुल शोख | ८८ |
| २० | अजय कांडर यांच्या कवितेतील स्त्री विवरण | डॉ.उदय जाधव | ९१ |
| २१ | मराठी भाषेपुढील आव्हाने | प्रा.विकास शंकर पाटील | ९७ |
| २२ | वै.काकांचे साधनेचे सप्त 'सोपान' | प्रा.डॉ.दत्तात्रेय प्रभाकर इंबरे | १०२ |
| २३ | वाचन संस्कृति आणि जागतिकीकरण | प्रा.पवार लता | १११ |
| २४ | अर्वाचीन वाङ्मय इतिहासाचे अध्यायः एक दिशा | प्रा. डॉ. सोपान सुरवर्से | ११५ |
| २५ | साठोत्तरी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषांओं के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन | डॉ.सौ.मेहेर एस.आर. | १२६ |
| २६ | हिंदी भाषा में फुले-आंबेडकरवादी साहित्य का स्वरूप : संक्षिप्त परिचय | प्रा. विनोदकुमार विलासराव बायचल | १३१ |
| २७ | नारी : व्युत्पत्तीमूलक अर्थ में | प्रा.डॉ. कदम एस.एस. | १३५ |
| २८ | बाल श्रम कि समस्या ओर प्रभावी उपाय | प्रा.डॉ.डी. एस. नामूर्ते | १३९ |
| २९ | नारी : व्युत्पत्तीमूलक अर्थ में | प्रा.डॉ. कदम एस.एस. | १४२ |
| ३० | आपका बंटी उपन्यास में बालमनो वैज्ञानिक विश्लेषण | प्रा.डॉ.उत्तम जाधव | १४६ |
| ३१ | श्री लाला शुक्लजी का महाकाव्यात्म उपन्यास - रागदरबारी | निकाळजे भुपेंद्र सर्जराव | १४९ |
| ३२ | व्यावसायिकता एवं हिंदी सिनेमा (धीरेन्द्र अस्थाना के देश निकाला उपन्यास के विशेष संदर्भ में) | डॉ. मीना खरात | १५१ |
| ३३ | विष्णु प्रभाकर के नाटक : एक वर्तमान संदर्भ | डॉ.मिर्जा असद बेगं | १५५ |
| ३४ | मरतमोला फकिर : नामदेव ढंसाल | डॉ. सुकुमार भडारे | १५९ |
| ३५ | गष्टभाषा हिंदी : कितनी सही ? कितनी प्रेरक? | प्रा.विटोरे कवृलाल आसाराम | १६३ |
| ३६ | Optimism- Key to Success | Dr.Archana Bobade | १६७ |
| ३७ | The God of Small Things : A Study of Women Exploitation | Prof. Kadam Sachin S. | १६९ |



मार्च
२०१४
१३-१४
०९ प्रोफिटिंग
ेस्ट

राष्ट्रीय चर्चासभा

शुक्रवार दि. १४/०३/२०१४ आणि शनिवार दि. १५/०३/२०१४

‘बळूचलाती प्रस्तार घाष्याती आणि क्षाहित्या द्युवळार’
गुरावर्य मामासाहेब दांडेकर कला, भगवंतराव वाजे
वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, तिळार

ता.सिन्हर, जि. नाशिक - ४२२ १०३. (महाराष्ट्र)

आयोजित आणि

महाविद्यालये आणि विद्यार्थी विकास मंडळ, पुणे विद्यार्थी युस्कृत



अनुक्रमणिका

| | | |
|------|---|----|
| 1. A | शुभोदय : आणि अधिनंदन – मा. श्रीमती निंपेगावाई पवार, सर्वित्पीय नगरातील प्रसारक समाज, नाशिक | 07 |
| 1. B | संख्यातील आणि पूर्णी – मा. डॉ. आर. एज. दालोरे प्राची, शिळंदर महालिया लय (आणि चाचीसजावे मुख्य संयोजक) | 08 |

Research Article(s) : Impact of Changing Medias on Language and Literature...1

| | | |
|-----|---|-------|
| 2. | बदलती प्रसारमाध्यमे आणि साहित्यव्यवहार- डॉ. वेदप्रा दिजय थिंगले | 09-15 |
| 3. | प्रगतीप्रितेतील बदलते प्रवाह- प्राचीर्य डॉ. उज्ज्वला वेवरे | 16-18 |
| 4. | मराठी वर्तमानपत्रे आणि मराठी साहित्यव्यवहार- प्रा. श्रीमती सरोजिनी छैरनार | 19-21 |
| 5. | प्रसारमाध्यमे : स्वरूप आणि भाषा- डॉ. वित्ता म्हाळकर | 22-25 |
| 6. | तांत्रिक युगातील बदलते प्रसार माध्यम: वर्तमान पत्र- डॉ. भाऊसाहेब गगे | 26-29 |
| 7. | प्रसारमाध्यम अंतील मराठी भाषेचे आजचे स्वरूप आणि बदलता साहित्यव्यवहार- डॉ. मर्मासिंह वाघ- दाभाई | 30-33 |
| 8. | वृत्तपत्र आणि याचे बदलते स्वरूप आणि भाषा - डॉ. महादेव कांबळे | 34-37 |
| 9. | प्रसारमाध्यमे आणि मराठी भाषा- डॉ. शितल एर, इंगले- गिरी | 38-39 |
| 10. | वृत्तपत्रे आणि आकाशमाणी- प्रा. के. एम. लोखंदे | 40-46 |
| 11. | तांत्रिक युगातील बदलती प्रसार माध्यमे- डॉ. दिलोप पुढीलक पवार | 47-51 |
| 12. | प्रसारमाध्यमे आणि साहित्य- वर्तमानपत्र व आकाशमाणीच्या संदर्भात - डॉ. सुरेश विनायक जाधव | 52-54 |
| 13. | बदलती भाषाने आणि मराठी साहित्य-प्रा. नंदा देशपंडे | 55-57 |
| 14. | प्रसारमाध्यमे आणि नाटक- प्रा. ली. बी. राठोड | 58-63 |
| 15. | वर्तमानपत्रांवा पुरवण्या आणि साहित्य व्यवहार- प्रा. राजेंद्र शमकृष्ण सांगले | 64-66 |
| 16. | मराठी वृत्तांच्या साहित्य व्यवहारातील इंग्लिश शब्दांचे आदान: एक विचार - डॉ. प्रमोद वांगेकर | 67-71 |
| 17. | इंटरव्हेटिव अल्पवृद्ध मराठी साहित्य- प्रा. प्रकाश शेवडे | 72-74 |
| 18. | सामाजिकातील सांकेतिक संशोधन वेटवकांग आणि साहित्यव्यवहार- प्रा. सुनिता जगताप | 75-77 |

Continued...

बदलती प्रसार माध्यमे आणि साहित्य व्यवहार

- प्रा. लता कोशु पवार

कौ. वी. आर. डी. कला व वाणिज्य महाविद्यालय, नाशिकरोड, नाशिक

प्रस्तावना: वेगाने बदलत्या तंत्रज्ञानाबरोवर प्रसारमाध्यमाचे स्वरूपही बदलत आहे. आपल्याकडे सुरुवातीला भटके जीवन जगणारे लोकलाकार काही प्रमाणात प्रसारमाध्यमांचे काम करत होते. महानुभवपंथीय श्रीचक्रधर त्याचे शिष्य आणि वारकरी प्रथातील विविध संत यांनी गावोगाव इवास करत धर्मप्रसार केला. त्यापूर्वी गौतम बुद्धाच्या शिष्यांनी प्रवास करत देशात व देशाबाहेरही धर्मप्रचाराचे कार्य वेळे. छाईचा शोध लागत्यावर विचार प्रसाराचे माध्यम म्हणून वर्तमानपत्र कार्य करू लागले. रेडिओचा शोध लागत्यावर श्राव्य स्वरूपात विचारांची देवांगेवाण सुरु झाली आणि ज्ञान प्रसारात मुरुवात झाली. जसजसे तंत्रज्ञान प्रगत होत गेले तसेतसे प्रसारमाध्यमाचे स्वरूप बदलत गेले ते पूर्वीपेक्षा अधिक वेगवान आणि अधिक सुलभ होत गेले. त्यामुळे ज्ञानप्रसाराच्या घेत्रात साहित्यव्यवहाराचे स्वरूप बदलले. मुरुवातीला भूर्जपत्र, ताप्रपत, शिलालेख, कोरीवलेख अशा माध्यमातून साहित्याचे जतन केलेले दिसून येते. साहित्य टिकिविण्यासाठी जाता नव्या डिजिटल तंत्रज्ञानाचा उपयोग केला जात आहे. मराठी साहित्य व्यवहारात या बदलत्या प्रसारमाध्यमांची भूमिका पाहू या.

वर्तमानपत्रातून साहित्य संमेलनांचा सचिव वृत्तांत, अग्रलेख, स्फूर्तलेख, पुस्तक परीक्षणे प्रकाशित केले जाते. साहित्यकांच्या मुलाखती, पुरवणीमध्ये कथा-कविता डापून येतात. आकाशवाणीवरून गाजलेल्या पुस्तकांचे अभिवाचन केले जाते. त्यात 'कोसला' (भालचंद्र नेमाडे), 'जोहाड' (सुरेखा शाह), 'मृत्युंजय' (शिवाजी सावंत), 'पाणीपत', 'झाडाझडती' (विश्वास पाटील), 'आई समजून घेताना' (उत्तम कांबळे), 'आश्रम नावाचं घर' (अचला जोशी), 'धग' (उद्धव शेळके), 'गरुडझेव' (भरत आंषठे) अशा कितीतरी पुस्तकांचे अभिवाचन केले गेले आहे. त्यामुळे निरक्षर लोकांनाही या साहित्याचा आस्वाद घेता येतो. नभोवाणीवरून काव्यगायन, नभोनाट्य, रूपक, साहित्यिकांच्या मुलाखती, पुस्तक परीक्षणे असे साहित्यव्यवहारात्मक कार्यक्रम सादर होतच असतात.

नोंदेल पारितोषिकविजेत्या शास्त्रज्ञांच्या त्यांच्या आत्मचरित्रात्मक विस्तृत मुलाखतीचे वृत्तांकन केले गेले. या अंतर्गत डॉ. माशेशवर, डॉ. गोवारीकर, डॉ. जयंत नारळीकर, डॉ. शर्मा, डॉ. माधव गाडील इत्यादींच्या विस्तृत मुलाखती ऐकविलेल्या गेल्या. शासनाच्या जालस्वरूप, स्वच्छता अभियान उपक्रमांचे नाट्यीकरण, महिला दिन, विज्ञान दिन, बालदिन अशा विविध दिनानिमित्त रूपक ऐकवरुणे जातात.

दूदरशीत: दूदरशीनवरून प्रत्यक्ष साहित्य आणि साहित्यक साहित्य संमेलनाच्या प्रत्यक्ष चिकिरणातून पहायला मिळतात. 'मालगुडी डेऊ'सारख्या मालिकांच्या रूपातून कांदंबन्या चित्ररूप करून दाखवल्या जातात. अनेक साहित्यिकांच्या पुस्तकांवर चित्रपट निशालेले आहेत. कांदंबन्यांचे संवादरूप लेखन करून त्यावरून नाटक, चित्रपट बनवले जातात. 'रामायण', 'महाभारत'सारखे ग्रंथ जे सामान्य माणसांच्या वाचनात येत नाहीत. निरक्षण माणसाला वाचणे शक्य नाही; ते प्रत्यक्ष चित्रसंवाद रूपात पाहता येतात.

ई-पुस्तकांची निर्मिती: मराठी भाषा विभागाच्यावरीने आता विविध प्रकाशनांच्या सूमारे पाचशे पुस्तकांचे ई-पुस्तकात प्रकाशन करण्याचा निर्णय घेण्यात आला. त्यात भाषा संचालनालयाची सततेचाळीस प्रकाशने, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाची चारशे चौरांचीस प्रकाशने आणि राज्य विकास संस्थेची नऊ प्रकाशने आहेत. मराठी विश्वकोशाचे खंड १ ते १७ सीडी स्वरूपात उपलब्ध करून देण्यात आले आहेत.

श्राव्य पुस्तके: राज्य मराठी विकास संस्थेमार्फत काही निवडक उत्तम दर्जा असलेल्या साहित्यावर श्राव्य पुस्तके, (Listening books) तयार करण्यात येत आहेत. पैकी श्रीसमर्थ 'दासबोध', यशवंतराव चवळण याचे आत्मचरित्र 'कृष्णाकाव', कवी कुसुमगजांचे काव्यसंग्रह 'प्रवासी पक्षी', 'रसयात्रा', विं दा. करंदीकर याचे